सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2023 का तृतीय अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् बनवारीलाल गौड़ द्वारा लिखित शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोग एवायुः' शोधलेख में आयुर्वेद के मूलाधार आयु के विषय में शरीर एवं इन्द्रिय की बलवत्ता को अनिवार्य बतलाकर स्वास्थ्य चेतना का मार्ग प्रशस्त किया गया है। डॉ. कुलवन्त सिंह शेखावत द्वारा लिखित 'भारतीय इतिहास -लेखन के प्रमुख विचारधाराएँ' शीर्षक शोधलेख में इतिहास लेखन से संबंधित अनेक प्रविधियों की परम्परागत जानकारी प्रदान करते हुए इतिहास लेखन हेतु आवश्यक तत्त्वों को निर्दिष्ट किया गया है। बालकृष्ण एम. दवे द्वारा लिखित 'वैदिकी पर्यावरणप्रक्रिया' लेख में पर्यावरण शोधन एवं संरक्षण के विषय में वैदिक पारम्परिक उपायों के साथ यज्ञ की उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा लिखित 'राष्ट्रवादी स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व विधायक : भाईजी रामरतन कोचर' लेख में सुप्रसिद्ध, समाजसेवी, देशसेवा, जन सेवा, धर्म सेवामय जीवन से ओतप्रोत व्यक्तित्व प्रखर राष्ट्रवादी स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व विधायक रामरतन जी के सामाजिक एवं राजनीतिक अवदान का प्रस्तुतीकरण किया गया है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा